ISSN - 2348-2397
UGC CARE LISTED JOURNAL
DIS

शोध सरिता

January-March, 2021
Vol. 8, Issue 29
Page Nos. 209-213

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

शिक्षकों की भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुष्टि के प्रभाव का अध्ययन

Mrs. Pritika Tamrakar*
Dr. Jyotsna Gadpayle**
Dr. Kavita Verma***

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध छत्तीसगढ़ के शिक्षकों की भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुश्टि के प्रभाव का अध्ययन करना था। न्यादर्श के लिये उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों (महिला एवं पुरूश) में से 15 महिला शिक्षक एवं 15 पुरूश शिक्षकों को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया। अतः न्यादर्श हेतु दुर्ग जिले के 374 सी.बी.एस.ई. व सी.जी. बोर्ड के शिक्षकों का चुनाव यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। भूमिका द्वंद के मापन हेतु मधु गुप्ता एवं इंदु नैना द्वारा निर्मित भूमिका द्वंद मापनी (2016) एवं कार्य संतुश्टि के मापन के लिये पी. कुमार एवं डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित शिक्षक कार्य संतुश्टि प्रश्नावली (2017) का प्रयोग किया गया। आंकड़ो के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकला है, कि उच्च कार्य संतुष्टि वाले शिक्षकों एवं निम्न कार्य संतुष्टि वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि समान स्तर की पाई गई।सी.बी. एस.ई. बोर्ड व सी.जी. बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि समान स्तर की पाई गई। महिला एवं पुरूश शिक्षकों की कार्य संतुष्टि समान स्तर की पाई गई।

Keywords : भूमिका द्वंद, कार्य संतुश्टि

प्रस्तावना –

शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है।

शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है। बालक के इस विकास के क्रम में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षक सिखाता है तो बालक सीखता है। यदि शिक्षक निर्देशन देता है तो बालक उसको ग्रहण करता है। इसी प्रकार शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक तथा बालक दानों के बीच परस्पर आदान–प्रदान होता है। व्यक्ति को अपने लक्ष्य–प्राप्ति के दौरान अनेकों बाधाओं का सामना करना पड़ता है। कई बार समय कम होने, अनेक विकल्पों में से एक को चुनने तथा लक्ष्य प्राप्ति के बाद अगले लक्ष्य के निर्धारण में अनेक बाधायें आती है। इस तरह की परिस्थिति में भूमिका द्वंद उत्पन्न होता है।

भूमिका द्वंद के उत्पन्न होने से शिक्षकों के कार्य संतुश्टि में प्रभाव पड़ता है। कार्य संतुश्टि पूर्णतया मनोवैज्ञानिक कहीं जा सकती है विभिन्न परिस्थितियों एवं विभिन्न दशाओं में तथा दबावों में मनुश्य की कार्य करने वाली क्षमता अलग होती है। कार्य क्षमता प्रभावित होने से शिक्षकीय तनाव उत्पन्न हो जाता है। शिक्षकीय तनाव बहुत अधिक सोचने, विचारने या चिंता करने से उत्पन्न होता है।

अतः शिक्षकों के भूमिका द्वंद का उनकी कार्य संतुश्टि व शिक्षकीय तनाव पर प्रभाव पड़ता है।

भूमिका द्वंद

भूमिका द्वंद का तात्पर्य विरोध और विपरित इच्छाओं में तनाव के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली स्थिति से हैं।द्वंद शब्द को अंग्रेजी में ब्वदसिपबज कहते है यह शब्द लेटिन भाशा के शब्द ब्वद़सिपहव से मिलकर बना है।

Con - Together
fligo - To strike

अतः द्वंद का अर्थ है लड़ना, प्रभुत्व के लिये संघर्श करना आदि।

भूमिका द्वंद का अर्थ है – व्यक्ति को जब विरोधी विचारों, इच्छाओं, उद्देश्यों आदि का सामना करना पड़ता है तो उसके मस्तिश्क में द्वंद आरंभ हो जाता है इसे भूमिका द्वंद कहते है। भूमिका द्वंद की दशा में व्यक्ति में प्रायः संवेगात्मक तनाव उत्पन्न

*Research Scholar - Kalyan PG College, Bhilai, Chhattisgarh.
**Assistant Professor - St. Thomas College, Bhilai, Chhattisgarh
***Assistant Professor - Kalyan PG College, Bhilai, Chhattisgarh.

हो जाता है। यह द्वंद व्यक्ति के विचारों, इच्छाओं, भावनाओं, दृश्टिकोण इत्यादि में पाया जाता है।

फ्रायड – इदम्, अहम् और परम् अहम् के बीच सामंजस्य का आभाव होने से द्वंद होता है।

क्रो व क्रो के अनुसार – "द्वंद उस समय उत्पन्न होते है जब व्यक्ति को अपने वातावरण में ऐसी शक्तियों का सामना करना पड़ता है जो उसके स्वयं के हितों और इच्छाओं के विरूद्ध कार्य करती है।"

भूमिका द्वंद उन परिस्थितियों में होता है जहाँ भूमिका कर्ता को संघर्शात्मक या प्रतिद्वंदात्मक प्रत्याशाओं का सामना करना पड़ता है।

कार्य संतुश्टि –कार्य संतुश्टि वह है, जब एक व्यक्ति नौकरी से तब संतुश्ट होता है। जब वह शारीरिक व मानसिक दोनों रूप से संतुश्ट हो जाता है, जो उसकी बुनियादी जरूरतों को पूरा कर सकता है।

कार्य संतुश्टि तीन क्षेत्रों से निर्मित होता है पहला विशिश्ट कारक जो कार्य से संबंधित है दुसरा व्यक्तिगत समायोजन तथा तीसरा क्षेत्र समूह संबंध है ये तीन क्षेत्र कभी कार्य संतुश्टि से अलग नहीं किये जा सकते है और कार्य संतुश्टि इन तीनो से मिलकर बना है।

वॉलमैन के अनुसार (1923) – "कार्य संतुश्टि की सुखद अनुभुति तब होती है जब कोई प्रेरणा आवश्यकता या लक्ष्य सफलतापूर्वक पूरा हो जाता है।"

उद्देश्य –

शिक्षकों के भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुश्टि, बोर्ड का प्रकार एवं लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना –

शिक्षकों के भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुश्टि, बोर्ड के प्रकार एवं लिंग का मुख्य एवं अंतः क्रियात्मक सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

शोध प्रक्रिया –

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। दुर्ग जिले के सी.बी.एस.ई. एवं सी.जी. बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया । चयनित शिक्षकों की भूमिका द्वंद पर उनकी कार्य संतुश्टि का प्रभाव देखा गया ।

जनसंख्या –प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षको की भूमिका द्वंद पर कार्य संतुश्टि एवं शिक्षकीय तनाव का प्रभाव जानने के लिये छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले को अध्ययन क्षेत्र के रूप में लिया गया।

सत्र 2019–20 में इस जिले के समस्त सी.बी.एस.ई. बोर्ड व सी.जी. बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक (महिला एवं पुरूश) जनसंख्या के अंतर्गत है।

न्यादर्श :–-संपूर्ण जनसंख्या पर आकड़ों का संकलन वैज्ञानिक दृश्टि से उपयुक्त नहीं होता है। इस कारण न्यादर्श के लिये इस बात को ध्यान में रखना होता है कि न्यादर्श संपूर्ण जनसंख्या को प्रतिबिंबित करता हुआ हो।

इसके लिए दुर्ग जिले के प्रत्येक विकासखण्ड (धमधा, पाटन, दुर्ग) में सी.बी.एस.ई. एवं सी.जी. बोर्ड के विद्यालयों को यादृच्छिक रूप में चयनित किया गया तथा प्रत्येक चयनित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों (महिला एवं पुरूश) में से 15 महिला शिक्षक एवं 15 पुरूश शिक्षकों को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया। अतः न्यादर्श हेतु दुर्ग जिले के 374 सी. बी.एस.ई. व सी.जी. बोर्ड के शिक्षकों का चुनाव यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया।

उपकरण :–

प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षकों के भूमिका द्वंद, कार्य संतुश्टि तथा शिक्षकीय तनाव के मापन हेतु निम्नलिखित उपरकरणों का उपयोग किया गया :–

भूमिका द्वंद :–

भूमिका द्वंद के मापन हेतु मधु गुप्ता एवं इंदु नैना द्वारा निर्मित भूमिका द्वंद मापनी (2016) का प्रयोग किया गया। इस मापनी में छः आयाम हैं – 1. पारिवारिक द्वंद 2. कार्य द्वंद 3. व्यवसायिक विकास द्वंद 4. आत्म द्वंद 5. स्वास्थ्य द्वंद 6. सामाजिक द्वंद। इन छः आयामों के कुल 28 पद हैं। इस मापनी की विश्वसनीयता 0.64–0.77 एवं वैधता 0.523–0.797 है।

कार्य संतुश्टि :–प्रस्तुत शोध कार्य में कार्य संतुश्टि के मापन के लिये पी. कुमार एवं डी. एन. मुथा द्वारा निर्मित शिक्षक कार्य संतुश्टि प्रश्नावली (2017) को उपकरण के रूप में चयनित किया गया । इस मापनी में चार आयाम हैं – 1. व्यवसायिक 2. कार्य दशा 3. सत्ता 4 संस्था। इन चार आयामों के कुल 29 पद हैं। इस मापनी की विश्वसनीयता 0.85 है।

आंकड़ो का विश्लेषण, निष्कर्ष एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य शिक्षकों के भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुश्टि, बोर्ड का प्रकार एवं लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना था।

इस उद्देश्य से संबंधित संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए 2X2X2 FD ANOVA की संगणना की गई है। इस संगणना से प्राप्त सारांश को तालिका क्रमांक 1 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक 1 शिक्षकों के भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुश्टि, बोर्ड का प्रकार एवं लिंग का प्रभाव

Source	Type III Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
jobsat	71.063	1	71.063	.497	.481
board	303.415	1	303.415	2.122	.146
gender	29.400	1	29.400	.206	.650
jobsat * board	.045	1	.045	.000	.986
jobsat * gender	39.831	1	39.831	.279	.598
board * gender	111.385	1	111.385	.779	.378
jobsat * board * gender	636.144	1	636.144	4.449	.036
error	52333.649	366	142.988		
Total	986410.000	374			

कार्य संतुष्टि का प्रभाव

तलिका 1 से यह स्पष्ट होता है कि कार्य संतुष्टि के लिए भूमिका द्वंद के F-Value का मान 0.497 df = 1/366 पायी गयी। यह F-Value सार्थक नहीं पाया गया है, अर्थात कार्य संतुष्टि का भूमिका द्वंद पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना कि शशिक्षकों के भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुश्टि का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगाश को स्वीकार किया जाता है।इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है, कि उच्च कार्य संतुष्टि वाले शिक्षकों एवं निम्न कार्य संतुष्टि वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि समान स्तर की होती है।।

बोर्ड के प्रकार का प्रभाव

तलिका 1 से यह भी देखा जा सकता है भूमिका द्वंद के लिए बोर्ड के प्रकार का F-Value का मान 2.122 df = 1/366 पायी गयी। यह F-Value सार्थक नहीं पायी गयी। है, अर्थात भूमिका द्वंद पर बोर्ड के प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना कि शिक्षकों के भूमिका द्वंद पर उनके बोर्ड के प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा को स्वीकार किया जाता है।इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है, कि सी.बी.एस. ई. बोर्ड व सी.जी. बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भूमिका द्वंद समान स्तर की होती है।

लिंग का प्रभाव

तलिका 1 से यह भी देखा जा सकता है भूमिका द्वंद के लिए लिंग की F-Value का मान 0.206 df = 1/366 पाया गया । यह F-Value सार्थक नहीं पायी गयी। है, अर्थात लिंग का भूमिका द्वंद पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना कि शिक्षकों के भूमिका द्वंद पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा को स्वीकार किया जाता है। इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है, कि महिला एवं पुरूश शिक्षकों की भूमिका द्वंद समान स्तर की होती है।

कार्य संतुष्टि एवं बोर्ड के प्रकार की अंतःक्रिया प्रभाव

तलिका 1 से यह स्पष्ट होता है कि भूमिका द्वंद के लिए कार्य संतुष्टि एवं बोर्ड के प्रकार की अंतःक्रिया की F-Value का मान 0.000 df = 1/366 सार्थक नहीं पाया गया है । अर्थात अतः शून्य परिकल्पना कि भूमिका द्वंद पर कार्य संतुष्टि एवं बोर्ड के प्रकार की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा को स्वीकार किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों की भूमिका द्वंद कार्य संतुष्टि एवं बोर्ड के प्रकार की अंतःक्रिया के प्रभाव से मुक्त है। ।

कार्य संतुष्टि एवं लिंग अंतःक्रिया का प्रभाव

तलिका 1 से यह स्पष्ट होता है कि भूमिका द्वंद के लिए कार्य संतुष्टि एवं लिंग की अंतःक्रिया की F-Value का मान 0.279 df = 1/366 सार्थक नहीं पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना कि भूमिका द्वंद पर कार्य संतुष्टि एवं लिंग की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा को स्वीकार किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों की भूमिका द्वंद कार्य संतुष्टि एवं लिंग की अंतःक्रिया के प्रभाव से मुक्त है।

बोर्ड के प्रकार एवं लिंग की अंतःक्रिया का प्रभाव

तलिका 1 से यह भी स्पष्ट होता है कि भूमिका द्वंद के लिए बोर्ड के प्रकार एवं लिंग की अंतःक्रिया की F-Value का मान 0.779 df = 1/366 सार्थक नहीं पाया गया है। अर्थात अतः शून्य परिकल्पना कि भूमिका द्वंद पर बोर्ड के प्रकार एवं लिंग के अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगाश को स्वीकार किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों की भूमिका द्वंद बोर्ड के प्रकार एवं लिंग की अंतःक्रिया के प्रभाव से मुक्त है।

कार्य संतुश्टि, बोर्ड के प्रकार एवं लिंग की अंतःक्रिया का प्रभाव

तलिका 1 से यह भी स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुश्टि, बोर्ड **के** प्रकार एवं लिंग की अंतःक्रिया की F-Value का मान 4.449 df = 1/366 जो 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया है। अर्थात अतः शून्य परिकल्पना कि भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुश्टि, बोर्ड **के** प्रकार एवं लिंग की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा को अस्वीकार किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों की भूमिका द्वंद पर उनके कार्य संतुश्टि, बोर्ड **के** प्रकार एवं लिंग की अंतःक्रिया का सार्थक प्रभाव पाया गया । इसका प्रभाव प्रचलन ग्राफ 1 एवं ग्राफ 2 में दर्शाया गया है ।

Graph 1

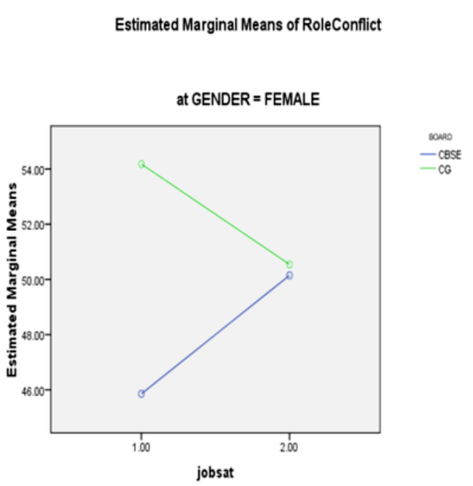

ग्राफ 1 यह दर्शाता है कि सी.बी.एस.ई. बोर्ड की महिला शिक्षकों की कार्य संतुश्टि सी.जी. बोर्ड महिला शिक्षकों की कार्य संतुश्टि से कम है ।

Graph 2

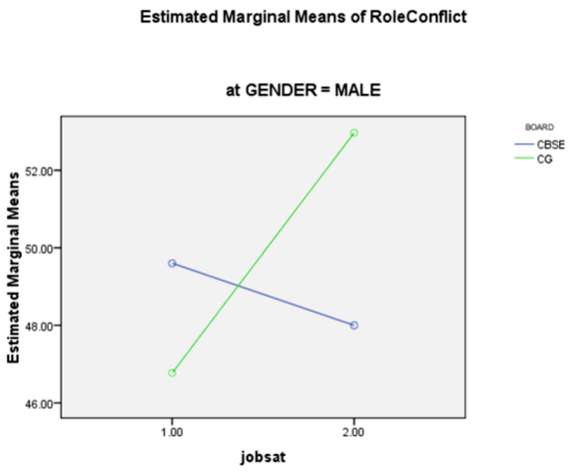

ग्राफ 2 यह दर्शाता है कि सी.जी बोर्ड की पुरूश शिक्षकों की कार्य संतुश्टि. सी.बी.एस.ई. बोर्ड के पुरूश शिक्षकों की कार्य संतुश्टि से कम है।

निष्कर्ष

इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है, कि उच्च कार्य संतुष्टि वाले शिक्षकों एवं निम्न कार्य संतुष्टि वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि समान स्तर की होती है।। सी.बी.एस.ई. बोर्ड व सी. जी. बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि समान स्तर की होती है। ।महिला एवं पुरूश शिक्षकों की कार्य संतुष्टि समान स्तर की होती है। ।शिक्षकों की भूमिका द्वंदए कार्य संतुष्टि एवं बोर्ड के प्रकार की अंतर क्रिया के प्रभाव से मुक्त है। ।शिक्षकों की भूमिका द्वंदए कार्य संतुष्टि एवं लिंग की अंतर क्रिया के प्रभाव से मुक्त है। ।शिक्षकों की भूमिका द्वंदए बोर्ड के प्रकार एवं लिंग की अंतर क्रिया के प्रभाव से मुक्त है। ।सी.बी.एस.ई. बोर्ड की महिला शिक्षकों की कार्य संतुश्टि सी.जी. बोर्ड महिला शिक्षकों की कार्य संतुश्टि से कम होती है। सी.जी बोर्ड की पुरूश शिक्षकों की कार्य संतुश्टि सी.बी.एस.ई. बोर्ड पुरूश शिक्षकों की कार्य संतुश्टि से कम होती है।

सन्दर्भ :–

- Agrawal S, (2012) 'A study of role conflict International to Professional commitment, Frustration Tolerance and Attitude' *Shodhganga inflibnet.*
- Gupta. M, (2016) I; 'Role conflict Amount Teachers' Scholarly *Research Journal;* ISSN: 2348-3083, 3/13 Jan.

- Hassan A. (2016) 'A study of occupational stress of primary school teachers' *Educational confab*, 3 (4), April.
- Khan, S. (2018) A comparative study of risk taking ability of children of working and non-working mothers. *International Education and Research Journal. Vol: 04, issue 10.*
- Khan, S. (2018) A comparative study of Reasoning Ability of Rural and Urban area students. *International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR). Vol. 05, Issue 04.*
- Khan, S. (2018) A comparative study of reasoning Ability of male and female students. *International Education and Research Journal, Vol: 04, issue 11.*
- Thakur N. (2014) *"A comparative study on job satisfaction of teacher educators in Relation to private teachers training institutions", International journal of Education and Psychological Research,* 3, Issue 4, Dec.

❐❐❐